

तेषां MBh. 92, 10. — 2) sich öffnen, aufblühen: विजृम्भित aufgebüht TRIK. 3, 3, 185. H. 1128. MBh. t. 219. पनसाश्चत्थवटवाटीविजृम्भित (कीडा-वन) BRAHMA-P. in Verz. d. Oxf. H. 17, b. Mit transit. Bed.: नयनाम्बुरुहं विजृम्भन् Bhalo. P. 3, 9, 25. — 3) sich ausdehnen: सेदंशे यस्य रोमशं निषेडु-षौ विजृम्भते (von der Erektion) RV. 10, 86, 16. नयनम् — तिर्पिग्विजृ-म्भिततरकम् Sāh. D. 71, 10. — 4) zurückschnellen (vom Bogen): कर्पास्त्रि च विजृम्भिते MBh. 8, 3984. R. Goar. 1, 77, 22. — 5) sich ausstrecken, sich zur That anschicken, sich muthig zeigen: इत्युक्त्वा स मृदाबाहुर्विजृम्भते जिघांसया MBh. 4, 809. तद्विजृम्भस्व विक्रात्त ब्रवतां प्रवेरो ह्यसि R. 5, 2, 34. — 6) sich entfalten, sich erheben, hervorbrechen, ausbrechen, anbrechen, zur Erscheinung kommen: (धूमचयः) ध्रुवाद्ये विजृम्भति यदि दिनमे-कं दिनद्वयं वापि VARĀH. BRH. S. 37, 4. मङ्गलतूर्पनिस्वनाः — व्यजृम्भत RAGH. 3, 19. रणो दिग्विजृम्भितकाकुत्स्थपौलस्त्यजयघोषणाः 12, 72. प्रज्ञासु डुःस-हा ज्ञातु व्यापदैवी व्यजृम्भत RĀGĀ-TAR. 2, 17. रजान्या सह विजृम्भते मदन-बाधा VIKR. 41, 15. रजोऽन्धकारस्य विजृम्भितस्य RAGH. 7, 39. यशा विजृ-म्भितं गुणैर्शेषैः BHĀG. P. 4, 21, 8. तपोयोगविजृम्भितम् । स्वगार्हस्थ्यम् 3, 33, 15. ज्ञानेन वैराग्यविजृम्भितेन 25, 27. 1, 2, 31. विजृम्भितस्त्रेह 5, 4, 17. तत्परकर्णपूर्गुणाभिधानेन विजृम्भमाणाया । भक्त्या 4, 22, 25. — Nach TRIK. 3, 3, 185 hat विजृम्भित die Bed. von अभ्युद्यत und चेष्टित; विजृम्भित n. s. bes.

— सम् sich entfalten, anbrechen, zur Erscheinung kommen: मण्डले ऽखण्डिताज्ञं दिदायाः समजृम्भत RĀGĀ-TAR. 6, 229.

अय (von 1. अि) s. पृथुअय.

अयस (wie eben) n. Fläche, Strecke, Raum (im Zend sarajō): तुविद्येभिः सर्वभिर्याति वि अयः RV. 1, 140, 9. श्रोषा अयः उरु अयः 4, 32, 5. 5, 44, 6. उरु ते अयः पर्येति बुधम् 4, 93, 9. रुद्रभिर्योषा तनुते पृथु अयः 101, 7. आ भानुना पार्थिवानि अयंसि मरुत्सेदस्य धृषता तन्त्य 6, 6, 6. 5, 8, 7. (सि-न्धुः) परि अयंसि भरते रजसि 10, 75, 7. इमे चिदस्य अयंसो नु देवी इन्द्र-स्योऽसो भियसो जिहते 5, 32, 9. 8, 2, 33. — Vgl. उरु°, पृथु° und अय.

अयसान् (von 1. अि oder अयस; vgl. AUFB. in Z. f. vgl. Spr. 2, 150, fg.) adj. sich ausbreitend, Raum einnehmend: अयसानावरं पृथ्वतिं तरति याम-भिः (Mitra-Varuṇa) RV. 5, 66, 5. वि यस्य ते अयसानस्याजर धेतोर्न वाताः परि सत्यव्युताः 10, 113, 4.

1. अि, अयति = गतिकर्मन् NAIH. 2, 14. überwältigen DHĀTUR. 22, 49.

— उप sich ausbreiten zu (?): जिगाडुप अयति गोर्पीच्यं पदं परस्य मनुष्या घञीजनन् RV. 9, 71, 5.

— परि s. परिअि.

2. अि adj. = 1. अि; s. उरु°.

3. अि und अी, अयति, आययति und अिणाति altern DHĀTUR. 34, 9, v. 1. 31, 24, v. 1. — Vgl. 1. जर.

ज्वर, ज्वरति fiebern DHĀTUR. 19, 14. pass. dass.: ज्वर्यते प्रततम् SUCR. 2, 84, 13. Derivv. von ज्वर mit Vocalisirung des व P. 6, 4, 20. Vgl. ज्वल्. — caus. ज्वरयति Jmd in Fieberhitze versetzen P. 2, 3, 54. चौरं ज्व-रयति ज्वरः Sch. ततः पूर्वदिने पूर्वतकाः सिद्धभूतः । ज्वरयिष्यति संवेश-पत्नीम् ÇATR. 14, 216.

— सम् sich betrüben: प्रिये नातिभृशं हृष्येदप्रिये न स संज्वरेत् MBh. 3, 18743 (darnach 12, 3492 zu verbessern). 1, 3584. 2, 1695. ता वाचः सु-हृदः श्रुत्वा संज्वरिष्यति मे भृशम् 12, 5631. — Vgl. संज्वर.

— अनुसम् sich nach Jmd —, ihm nachfolgend betrüben: (पूरुषः) कि-मिच्छन्कास्य कामाय शरीरमनुसंज्वरेत् (Çat. Ba. an der entspr. Stelle: अनु-संज्वरेत्) BRH. ĀR. UP. 4, 4, 12. sich betrüben, Neid empfinden MBh. 5, 1605. 1607.

— अभिसम् sich betrüben über, beneiden: न मान्यमभिसंज्वरेत् MBh. 5, 1615.

ज्वर (von ज्वर) gaṇa वृषादि zu P. 6, 1, 203. 1) adj. aufgeregt, in Lei- denschaft: तावुभौ समनुप्राप्तौ विवदतौ भृशं ज्वरो MBh. 13, 3464. — 2) m. a) Fieber AK. 2, 6, 2, 7. 3, 3, 39. H. 471. KAUC. 13. Die verschiedenen Arten desselben werden nach den dabei als afficirt gedachten humores (दोष) be- nannt; s. SUCR. 2, 401. fgg. WISE 224. fgg. z. B. पैतिक oder पित्तज्वर, श्लैष्मिक, सर्वज्ञ oder सर्वज्वर; पित्तकफानिलज्वरः MBh. 8, 4693. Das Fieber heisst der Anführer oder König der Krankheiten SUCR. 2, 399, 17. 427, 15. 400, 9. 1, 120, 17. 19. VARĀH. BRH. S. 31, 10. 14. 97, 3. 104, 13. ज्वराम्नि HĀR. 200. Ursprung des Fiebers und die Form seiner Erscheinung bei Belebtem und Unbelebtem MBh. 12, 10255. fgg. पितामरुमुवाङ्क- ता रौद्रा रुद्राङ्गसंभवाः । कुमारस्कन्दज्ञाश्चैव ज्वरावै वैश्वदायः HARIV. 9543. माकेश्वरश्च वैश्वश्च ज्वरो 9536. personif. 10309. fgg. स्वियमानज्वरं प्रा- ज्ञः कोऽभसा परिषिञ्चति PAÑKĀT. III, 26. स्मरज्वरेण तैनेष नृपः पञ्चलमा- यैौ KATHĀS. 15, 79. दाह° hitziges Fieber 3, 122. लोकत्रयमस्तकज्वरं त- मादिदेत्यम् BHĀG. P. 7, 8, 35. चित्ता ज्वरो मनुष्याणां वस्त्राणामातपो ज्वरः । अमैभाग्यं ज्वरः त्वाणामश्नां मैथुनं ज्वरः ॥ KĀN. 41. मैथुन° Geilheit MBh. 13, 1516. इनरगादरिवर्गस्य हृदयात् रुजाज्वरः (?) VID. 13. ज्वरनिर्णय m. Titel eines Werkes Verz. d. B. H. No. 951. Das f. ज्वर in folg. Stelle: यासो पीत्वा किल क्षीरं न जीर्यति मरुसुराः । विज्वरा ज्वर्या त्यक्ता भव- त्ति किल ज्ञतवः ॥ HARIV. 10918. — b) das an der Seele zehrende Fie- ber, Seelenschmerz, Betrübniß, Trauer: जीविते परं दुःखं जीविते पर- मो ज्वरः BRĀHMAṆ. 1, 15. व्येतु ते मनसो ज्वरः R. 4, 18, 11. RAGH. 8, 83. यौ तेजस्वतीदेव्या मनसश्च मरुज्वरः VID. 52. भव गतज्वरा R. 6, 98, 7. N. 20, 32. युध्यस्व विगतज्वरः BHĀG. 3, 30. तेभ्यश्च विगतज्वरा MBh. 3, 14734. N. 12, 68. R. 2, 33, 31. — Vgl. अङ्ग°, वि°.

ज्वरघ्न (ज्वर + घ्न) 1) adj. Fieber vertreibend SUCR. 2, 407, 15. — 2) m. (nach WILS. f. ई) a) Cocculus cordifolius DC. (गुडूची). — b) Chenopodium album u. s. w. (वास्तूक) RĀGĀN. im ÇKDR.

ज्वरहृत्तर (ज्वर + हृत्) 1) adj. Fieber vertreibend. — 2) f. °हृत्वा Rubia Munjista (मञ्जिष्ठा) ROXB. RĀGĀN. im ÇKDR.

ज्वराङ्कुश (ज्वर + अङ्कुश) m. 1) ein Mittel gegen das Fieber Verz. d. B. H. No. 963. — 2) N. einer Pflanze, Andropogon Jwarancusa ROXB. Bl. HAUGHTH. — 3) Titel eines medic. Werkes Verz. d. B. H. No. 941.

ज्वराङ्गी (ज्वर + अङ्ग) f. N. einer Pflanze (s. भद्रदत्तिका) RĀGĀN. im ÇKDR.

ज्वरात्तक (ज्वर + अत्तक) 1) adj. Fieber vertreibend. — 2) m. a) Cathartocarpus fistula (आरग्वध). — b) eine (in Nepal wachsende) Nim- ba-Art RĀGĀN. im ÇKDR.

ज्वरपक् (ज्वर + अपक्) 1) adj. Fieber vertreibend SUCR. 2, 408, 5. 416, 17. — 2) f. आ N. eines gegen Fieber angewandten Mittels, = विह्वपत्नी (fehlt in den Wörterbüchern, eben so वित्त्व°: वित्त्वपर्णी ist eine best. Gemüsepflanze), vulg. वेत्तप्रुठा ÇABDAK. im ÇKDR. Letzteres ist nach RĀ-